अध्याय 10: परीक्षा

विषय-सूची

9 प्रश्नावली · 17 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1	मेरी समझ से	2 प्रश्न
प्रश्नावली 10.2	शीर्षक	2 प्रश्न
प्रश्नावली 10.3	पंक्तियों पर चर्चा	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.4	सोच-विचार के लिए	3 प्रश्न
प्रश्नावली 10.5	खोजबीन	2 प्रश्न
प्रश्नावली 10.6	समस्या और समाधान	3 प्रश्न
प्रश्नावली 10.7	मन के भाव	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.8	विपरीतार्थक शब्द	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.9	अनुमान या कल्पना से	2 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

आपकी समझ से नीचे दिए गए प्रश्न का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए — महाराज ने दीवान को ही उनका उत्तराधिकारी चुनने का कार्य उनके किस गुण के कारण सौंपा? (क) सादगी (ख) उदारता (ग) बल (घ) नीतिकुशलता

हल

कहानी की शुरुआत में लिखा है — 'राजा साहब अपने अनुभवशील नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे।' महाराज दीवान सुजानसिंह को उनकी नीतिकुशलता (राजनीति और नीति की समझ) के कारण सम्मान देते थे। इसीलिए जब दीवान ने नौकरी छोड़ने की इच्छा जताई, तो महाराज ने उन्हें ही नया दीवान खोजने की जिम्मेदारी सौंपी — क्योंकि वे जानते थे कि सही इंसान की पहचान दीवान की नीतिकुशलता ही कर सकती है।

उत्तर: (घ) नीतिकुशलता

प्रश्न 2

आपकी समझ से नीचे दिए गए प्रश्न का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए — दीवान साहब द्वारा नौकरी छोड़ने के निश्चय का क्या कारण था? (क) परमात्मा की याद (ख) राज-काज सँभालने योग्य शक्ति न रहना (ग) बदनामी का भय (घ) चालीस वर्ष की नौकरी पूरी हो जाना

हल

दीवान सुजानसिंह ने महाराज से विनय की — 'दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की, अब मेरी अवस्था भी ढल गई, राज-काज सँभालने की शक्ति नहीं रही।'

उन्होंने यह भी कहा — 'कहीं भूल-चूक हो जाय तो बुढ़ापे में दाग लगे।'

स्पष्ट है कि उनका मुख्य कारण बढ़ती आयु में राज-काज सँभालने की शक्ति न रहना था।

विकल्प (घ) — 'चालीस वर्ष पूरे होना' — तथ्य सही है, पर वह निश्चय का कारण नहीं, बल्कि पृष्ठभूमि है। निर्णय शक्ति न रहने से हुआ।

उत्तर: (ख) राज-काज सँभालने योग्य शक्ति न रहना

प्रश्नावली 10.2 — शीर्षक

प्रश्न 1

आपने जो कहानी पढ़ी है, इसका नाम प्रेमचंद ने 'परीक्षा' रखा है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि उन्होंने इस कहानी का यह नाम क्यों दिया होगा? अपने उत्तर के कारण भी लिखिए।

हल

प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम 'परीक्षा' इसलिए रखा क्योंकि पूरी कहानी एक परीक्षा की प्रक्रिया है।
दीवान सुजानसिंह ने नए दीवान की तलाश में उम्मीदवारों को एक महीने तक रखकर उनके 'रहन-सहन, आचार-विचार' परखे।
यह परीक्षा केवल ज्ञान की नहीं थी, बल्कि चरित्र, दया, और कर्तव्यनिष्ठा की परीक्षा थी।
अंत में युवक खिलाड़ी ने कीचड़ में फँसी किसान की गाड़ी निकालकर यह 'परीक्षा' पास की — और दीवान की गद्दी पाई।
इस प्रकार 'परीक्षा' शीर्षक पूरी कहानी के केंद्रीय विचार को व्यक्त करता है।

उत्तर: प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम 'परीक्षा' रखा क्योंकि पूरी कहानी एक चरित्र-परीक्षण की प्रक्रिया है, जिसमें दया, साहस और कर्तव्यनिष्ठा परखी जाती है। युवक खिलाड़ी इस परीक्षा में उत्तीर्ण होकर दीवान बना।

प्रश्न 2

यदि आपको इस कहानी को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा, यह भी बताइए।

हल

इस कहानी को 'असली दीवान' या 'दया का फल' जैसा नाम दिया जा सकता है।
'असली दीवान' — क्योंकि कहानी यह दिखाती है कि असली दीवान वही होता है जिसके हृदय में दया और साहस हो, न कि वह जो केवल दिखावा करे।
'दया का फल' — क्योंकि युवक ने किसान की मदद दया और मानवता से की, और उसे उसका फल दीवानी के रूप में मिला।
ये नाम कहानी के नैतिक संदेश को व्यक्त करते हैं।

उत्तर: इस कहानी को 'असली दीवान' नाम दिया जा सकता है, क्योंकि कहानी का मुख्य संदेश यही है कि सच्चा नेता वही होता है जिसके मन में दूसरों के लिए दया और सेवा-भाव हो।

प्रश्नावली 10.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

कहानी में से चुनकर नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए — "इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी, जिसके हृदय में दया हो और साथ-साथ आत्मबल। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे। ऐसे गुणवाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं। "

हल

ये पंक्तियाँ सरदार सुजानसिंह द्वारा चुनाव के दिन कही गई हैं, जब उन्होंने युवक खिलाड़ी को दीवान घोषित किया। इनका अर्थ है — दीवान जैसे उच्च पद के लिए केवल बुद्धि या ज्ञान नहीं, बल्कि दो गुण जरूरी हैं: दया (उदार हृदय) और आत्मबल (संकट में वीरता से डटे रहना)।

'हृदय वह जो उदार हो' — अर्थात् जो दूसरों की मुश्किल देखकर मदद के लिए आगे आए, स्वार्थ न रखे।

'आत्मबल वह जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे' — अर्थात् जो कठिन परिस्थिति में भी हिम्मत न हारे।

ऐसे गुणवान लोग दुनिया में कम होते हैं, इसीलिए जो ऐसे होते हैं वे समाज में सम्मान और प्रसिद्धि पाते हैं।

युवक खिलाड़ी ने कीचड़ में फँसी गाड़ी निकालकर दोनों गुण दिखाए — इसीलिए वह दीवानी का पात्र बना।

उत्तर: इन पंक्तियों का अर्थ है — उच्च पद के लिए उदार हृदय (दया) और आत्मबल (संकट में वीरता) दोनों जरूरी हैं। ऐसे गुणवान लोग संसार में विरले होते हैं और यही गुण उन्हें सम्मान दिलाते हैं।

प्रश्नावली 10.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

नौकरी की चाह में आए लोगों ने नौकरी पाने के लिए कौन-कौन से प्रयत्न किए?

हल

कहानी में उम्मीदवारों ने नौकरी पाने के लिए अनेक प्रयत्न किए, जो सब दिखावे के थे:
मिस्टर 'अ' जो पहले नौ बजे दिन तक सोया करते थे, वे आजकल बगीचे में टहलते हुए ऊषा का दर्शन करते थे।
मिस्टर 'द', 'स' और 'ज' जिनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था, वे सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे।
मिस्टर 'ल' को किताब से घृणा थी, पर आजकल वे बड़े-बड़े ग्रंथ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे।
जिससे बात कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम देता था।
यानी सभी ने अपनी असली प्रकृति छुपाकर एक महीना ढोंग करने की कोशिश की।

उत्तर: उम्मीदवारों ने नौकरी पाने के लिए दिखावे के प्रयत्न किए — जल्दी उठना, नौकरों से नम्रता से बोलना, बड़े ग्रंथ पढ़ना — यानी एक महीने तक अपनी असली आदतें छुपाकर अच्छे दिखने की कोशिश की।

प्रश्न 2

"उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गईं।" खिलाड़ी को कौन-कौन सी बातें पता चल गईं?

हल

जब खिलाड़ी ने किसान को नाले में फँसी गाड़ी के साथ देखा, तो उसे एक ही नजर में सारी स्थिति समझ आ गई:
उसे पता चल गया कि किसान काफी देर से नाले में फँसा हुआ है।
उसे समझ आया कि अकेले किसान अपनी गाड़ी नहीं निकाल सकता।
वह जान गया कि किसान को किसी सहायक की जरूरत है।
उसे यह भी आभास हुआ कि अगर तुरंत मदद नहीं मिली तो किसान को सारी रात वहीं बैठना पड़ेगा।
('उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गईं' — यह वाक्य बताता है कि खिलाड़ी की समझ तेज और अनुभवशील थी।)

उत्तर: खिलाड़ी को एक नजर में पता चल गया कि किसान काफी देर से नाले में फँसा है, वह अकेले गाड़ी नहीं निकाल सकता, और तुरंत मदद न मिले तो उसे रातभर वहीं रहना पड़ेगा।

प्रश्न 3

"मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या।" किनकी आँखों में सत्कार था और किनकी आँखों में ईर्ष्या थी? क्यों?

हल

जब युवक खिलाड़ी कीचड़ में सना हुआ लौट रहा था, तब यह दृश्य था:
किसान की आँखों में सत्कार (आदर और कृतज्ञता) था — क्योंकि युवक ने बिना किसी स्वार्थ के उसकी गाड़ी

निकाली, खुद कीचड़ में घुटनों तक धँस गया।
अन्य खिलाड़ियों (उम्मीदवारों) की आँखों में ईर्ष्या थी — क्योंकि वे समझ रहे थे कि इस युवक ने दीवान की परीक्षा जीत ली है, जबकि वे सब सिर्फ दिखावा करते रहे।
कहानी में लिखा है — 'मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या' — 'उन' से किसान और 'इन' से अन्य उम्मीदवार।

उत्तर: किसान की आँखों में सत्कार था (क्योंकि युवक ने निःस्वार्थ भाव से उसकी मदद की) और अन्य उम्मीदवारों की आँखों में ईर्ष्या थी (क्योंकि वे समझ गए कि युवक ने दीवानी की परीक्षा जीत ली)।

प्रश्नावली 10.5 — खोजबीन

प्रश्न 1

कहानी में से वे वाक्य खोजकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि — शायद युवक बूढ़े किसान की असलियत पहचान गया था।

हल

इस बात का संकेत देने वाले वाक्य हैं:
"युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, क्या यह सुजानसिंह तो नहीं हैं? आवाज़ मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वही।"
यह वाक्य स्पष्ट करता है कि युवक को संदेह हो गया था कि यह बूढ़ा किसान असल में दीवान सुजानसिंह हैं।
इसके बावजूद उसने मदद जारी रखी — यह उसके असली चरित्र का प्रमाण है।

उत्तर: "युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, क्या यह सुजानसिंह तो नहीं हैं? आवाज़ मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वही।"

प्रश्न 2

कहानी में से वे वाक्य खोजकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि — नौकरी के लिए आए लोग किसी तरह बस नौकरी पा लेना चाहते थे।

हल

इस बात को दर्शाने वाले वाक्य हैं:
"लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है?"
यह वाक्य स्पष्ट करता है कि उम्मीदवार नौकरी पाने के लिए महज दिखावा कर रहे थे। एक महीना निकल जाने के बाद वे अपनी असली आदतों पर वापस आना चाहते थे।
उनका उद्देश्य सच में सुधरना नहीं, बल्कि किसी तरह नौकरी पा लेना था।

उत्तर: "लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है?"

प्रश्नावली 10.6 — समस्या और समाधान

प्रश्न 1

इस कहानी में कुछ समस्याएँ हैं और उनके समाधान भी हैं। कहानी को एक बार फिर से पढ़कर बताइए कि — महाराज के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने इसका क्या समाधान खोजा?

हल

समस्या: महाराज के विश्वासपात्र और अनुभवशील दीवान सुजानसिंह बुढ़ापे के कारण नौकरी छोड़ना चाहते थे। रियासत देवगढ़ को एक नए योग्य दीवान की जरूरत थी।
समाधान: महाराज ने दीवान सुजानसिंह को ही नया दीवान खोजने की जिम्मेदारी सौंपी।
दीवान ने देश के प्रसिद्ध पत्रों में विज्ञापन निकलवाया और उम्मीदवारों को एक महीने तक रखकर उनका 'रहन-सहन, आचार-विचार' परखा।
अंत में युवक खिलाड़ी — जिसने दया और साहस दिखाया — को दीवान चुना गया।

उत्तर: महाराज की समस्या थी — अनुभवी दीवान के जाने से रियासत के लिए योग्य उत्तराधिकारी मिलना। समाधान — दीवान सुजानसिंह को ही उम्मीदवारों की चरित्र-परीक्षा लेने की जिम्मेदारी दी गई।

प्रश्न 2

इस कहानी में कुछ समस्याएँ हैं और उनके समाधान भी हैं। कहानी को एक बार फिर से पढ़कर बताइए कि — दीवान के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने इसका क्या समाधान खोजा?

हल

समस्या: दीवान सुजानसिंह बूढ़े हो गए थे, राज-काज सँभालने की शक्ति नहीं रही थी। उन्हें डर था कि बुढ़ापे में कहीं कोई भूल हो जाए और जिंदगी भर की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।
एक और समस्या थी — वे महाराज के आग्रह पर रियासत के लिए योग्य दीवान खोजने की जिम्मेदारी उठा चुके थे। ऐसे व्यक्ति को पहचानना जो केवल दिखावा नहीं करता, बल्कि सच्चे दिल से दयालु और कर्तव्यनिष्ठ हो, कठिन था।
समाधान: दीवान ने एक महीने तक उम्मीदवारों के आचार-विचार परखे और स्वयं बूढ़े किसान का वेश धरकर नाले में गाड़ी फँसाई — एक व्यावहारिक परीक्षा ली।
जिस युवक ने दया और साहस से गाड़ी निकाली, उसे उन्होंने दीवान के पद के योग्य माना।

उत्तर: दीवान की समस्या थी — बुढ़ापे के कारण नौकरी छोड़ना, और साथ ही योग्य उत्तराधिकारी खोजना। समाधान — उन्होंने स्वयं किसान का वेश धरकर व्यावहारिक परीक्षा ली और सच्चे दयालु युवक को पहचाना।

प्रश्न 3

इस कहानी में कुछ समस्याएँ हैं और उनके समाधान भी हैं। कहानी को एक बार फिर से पढ़कर बताइए कि — नौकरी के लिए आए लोगों के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने इसका क्या समाधान खोजा?

हल

समस्या: नौकरी के लिए आए लोगों के सामने समस्या थी — एक उच्च पद पाने की इच्छा, पर उनके पास असली योग्यता (दया, उदारता, कर्तव्यनिष्ठा) नहीं थी।
समाधान: उन्होंने एक महीने के लिए दिखावा करने का रास्ता चुना — जो आदतें नहीं थीं, वे थोड़े दिन ओढ़ लीं।
परंतु जब असली परीक्षा का क्षण आया — किसान की गाड़ी नाले में फँसी थी — तब उनकी असलियत सामने आ गई।
कहानी में लिखा है: 'खिलाड़ियों ने भी उसको देखा मगर बंद आँखों से, जिनमें सहानुभूति न थी।'
और आगे: 'उनमें स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और वात्सल्य का नाम भी न था।'
ये दो अलग-अलग वाक्य हैं — पहले में 'सहानुभूति' का अभाव बताया है, दूसरे में 'स्वार्थ' और 'मद' की उपस्थिति।
उनका झूठा समाधान विफल हुआ — वे परीक्षा में नहीं उत्तीर्ण हुए।

उत्तर: उम्मीदवारों की समस्या थी — असली गुण न होने पर भी पद पाना। उन्होंने दिखावे का रास्ता चुना, पर जब कीचड़ में फँसे किसान की मदद का अवसर आया तो वे 'बंद आँखों से' देखते रहे जिनमें 'सहानुभूति न थी।' उनमें 'स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और वात्सल्य का नाम भी न था।'

प्रश्नावली 10.7 — मन के भाव

प्रश्न 1

"स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और वात्सल्य का नाम भी न था।" इस वाक्य में कुछ शब्दों के नीचे रेखा खींची हुई है। ये सभी नाम हैं, लेकिन दिखाई देने वाली वस्तुओं, व्यक्तियों या जगहों के नाम नहीं हैं। ये सभी शब्द मन के भावों के नाम हैं। आप कहानी में से ऐसे ही अन्य नामों को खोजकर रिक्त स्थानों में लिखिए।

हल

कहानी 'परीक्षा' में मन के भावों के नाम (abstract nouns) के उदाहरण:
स्वार्थ — अपने लिए सोचना
मद — घमंड, अहंकार
उदारता — दूसरों की मदद करने का भाव
वात्सल्य — स्नेह, ममता का भाव
सहानुभूति — दूसरे के दुख को महसूस करना
दया — करुणा का भाव
साहस — हिम्मत
नम्रता — विनम्रता का भाव
सदाचार — अच्छे आचरण का गुण
आत्मबल — मन की शक्ति
ईर्ष्या — दूसरे की उन्नति से जलना
ये सभी शब्द ऐसी चीजों के नाम हैं जो दिखती नहीं, बल्कि मन में महसूस होती हैं।

उत्तर: मन के भावों के नाम: स्वार्थ, मद, उदारता, वात्सल्य, सहानुभूति, दया, साहस, नम्रता, सदाचार, आत्मबल, ईर्ष्या।

प्रश्नावली 10.8 — विपरीतार्थक शब्द

प्रश्न 1

"विद्या का कम, परंतु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा।" 'कम' का विपरीत अर्थ देने वाला शब्द है 'अधिक'। इसी प्रकार के कुछ विपरीतार्थक शब्द नीचे दिए गए हैं लेकिन वे आमने-सामने नहीं हैं। रेखाएँ खींचकर विपरीतार्थक शब्दों के सही जोड़े बनाइए — स्तंभ 1: आना, गुण, आदर, स्वस्थ, कम, दयालु, योग्य, हार, आशा स्तंभ 2: निर्दयी, निराशा, जीत, अवगुण, अस्वस्थ, अधिक, जाना, अयोग्य, अनादर

हल

विपरीतार्थक शब्दों के सही जोड़े:

1. आना ↔ जाना
2. गुण ↔ अवगुण
3. आदर ↔ अनादर
4. स्वस्थ ↔ अस्वस्थ
5. कम ↔ अधिक
6. दयालु ↔ निर्दयी
7. योग्य ↔ अयोग्य
8. हार ↔ जीत
9. आशा ↔ निराशा

उत्तर: आना–जाना, गुण–अवगुण, आदर–अनादर, स्वस्थ–अस्वस्थ, कम–अधिक, दयालु–निर्दयी, योग्य–अयोग्य, हार–जीत, आशा–निराशा।

प्रश्नावली 10.9 — अनुमान या कल्पना से

प्रश्न 1

"दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला" देश के प्रसिद्ध पत्रों में नौकरी का विज्ञापन किसने निकलवाया होगा? आपको ऐसा क्यों लगता है?

हल

यह विज्ञापन दीवान सुजानसिंह ने महाराज की अनुमति से निकलवाया होगा।
कारण: महाराज ने दीवान सुजानसिंह को ही रियासत के लिए नया दीवान खोजने की शर्त लगाई थी — 'रियासत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।'
इस जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए दीवान ने ही विज्ञापन का प्रबंध किया होगा।
दीवान अनुभवशील और नीतिकुशल थे, इसलिए उन्होंने विज्ञापन में 'ग्रेजुएट होना जरूरी नहीं' और 'एक महीने के रहन-सहन की जाँच' जैसी शर्तें रखीं — ये शर्तें एक अनुभवी प्रशासक ही सोच सकता था।

उत्तर: विज्ञापन दीवान सुजानसिंह ने महाराज की स्वीकृति से निकलवाया होगा, क्योंकि महाराज ने नया दीवान खोजने की जिम्मेदारी उन्हें ही सौंपी थी।

प्रश्न 2

"इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में तहलका मचा दिया।" विज्ञापन ने पूरे देश में तहलका क्यों मचा दिया होगा?

हल

इस विज्ञापन की कुछ खास बातें थीं जिनसे पूरे देश में तहलका मच गया:
1. यह बहुत ऊँचा पद था — रियासत का दीवान (प्रधानमंत्री के समान)।
2. कोई खास डिग्री या प्रमाणपत्र जरूरी नहीं था — 'ग्रेजुएट होना जरूरी नहीं।'
3. केवल चरित्र और कर्तव्यनिष्ठा देखी जाएगी — 'विद्या का कम, परंतु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा।'
4. एक महीने के रहन-सहन की जाँच — यह नई और अनोखी शर्त थी।
5. 'मंदाग्नि के मरीज को यहाँ तक कष्ट उठाने की कोई जरूरत नहीं' — यानी शारीरिक रूप से स्वस्थ होना जरूरी है।
इतने ऊँचे पद पर बिना डिग्री के अवसर मिलना असाधारण बात थी — इसीलिए 'सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए।'

उत्तर: विज्ञापन ने तहलका इसलिए मचाया क्योंकि एक बहुत ऊँचे पद (दीवान) के लिए बिना किसी डिग्री के अवसर दिया गया था, और केवल एक महीने के आचार-व्यवहार की जाँच की शर्त थी। यह असाधारण और आकर्षक था।